بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-22.09.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 22 सितम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कुछ समय पहले बदर की लड़ाई के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बंधित घटनाएँ बयान की थीं। आज बदर के हवाले से ही कुछ सम्बंधित वृत्तांत पेश करूँगा जिनका इतिहास में वर्णन है तथा जानना भी अनिवार्य है। जैसा कि पहले ख़ुत्बों में वर्णन हो चुका है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन दिनों तक बदर के मैदान में ठहरे रहे तथा तीसरे दिन आप स. ने सवारियों के कजावे कसने का निर्देश दिया।

बदर के मैदान से ही आप स. ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. तथा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को मदीने की ओर बदर में विजय की शुभ सूचना का सन्देश देते हुए भेजा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की ओर वापसी की यात्रा शुरु की।

इस विजय प्राप्त सेना में मक्का के क़ुरैश में से सत्तर बन्दी भी साथ थे। इतिहास की पुस्तकों में लिखा है कि इनमें से दो बन्दियों नज़र बिन हारिस तथा उक़बा बिन अबी मुअीत को युद्ध के नियमों में उल्लंघन के अपराध के कारण रास्ते में ही मार दिया गया, परन्तु इस पर सब इतिहासकारों की सहमति नहीं है। अल्लामा इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़रा नामक स्थान पर पहुंचे तो नज़र बिन हारिस की हज़रत अली रज़ी. ने हत्या की थी। उनकी बहिन ने अपने भाई की मृत्य पर कुछ काव्य पंक्तियाँ कहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन पंक्तियों के विषय में पता चला तो आप स. बहुत रोए और फ़रमाया कि यदि ये काव्य पंक्तियाँ नज़र की हत्या से पहले मुझ तक पहुंचती तो मैं उसको क्षमा कर देता। कुछ सीरत लेखक इस बात का खंडन करते हैं तथा कुछ इस घटना का ही खंडन करते हैं, अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में वर्णन किया है कि कुछ इतिहासकारों ने क़ैद होने वाले रईसों में उक़बा बिन मुईत का नाम भी बयान किया है तथा लिखा है कि वह क़ैदी की अवस्था में ही वध किया गया था, किन्तु यह बात उचित नहीं है। हदीस तथा इतिहास में अत्यंत स्पष्ट रूप में आता है कि उक़बा बिन अबी मुईत युद्ध के मैदान में मारा गया था तथा उन मक्का के सरदारों में से था जिनके शव एक गढ़े में दफ़न किए गए थे, यद्यपि नज़र बिन हारिस की हत्या होना अधिकांश रिवायतों से विदित होता है तथा उसकी हत्या का कारण यह था कि वह उन लोगों में से था जो मक्का में निर्दोष मुसलमानों की हत्या के सीधे सीधे उत्तरदायी थे किन्तु यह विश्वस्नीय है कि यदि कोई व्यक्ति मारा गया तो वह नज़र बिन हारिस था जो कसास (जान के बदले जान) में मारा गया।

बदर के युद्ध में मुशरिकों के बड़े बड़े सरदारों सहित सत्तर काफ़िर मारे गए और सत्तर ही क़ैदी बनाए गए। सही बुख़ारी में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप स. के सहाबियों ने बदर के दिन एक सौ चालीस लोगों की हानि की थी अर्थात सत्तर बन्दी एवं सत्तर शव।

सहाबा किराम उन क़ैदियों के साथ अति सुन्दर व्यवहार करते थे तथा उनमें से कुछ भाग्य शाली बन्दी ऐसे थे जो इस्लाम की शिक्षाओं तथा सहाबियों के नैतिक आचरण से प्रभावित होकर मुसलमान हो गए थे। उनमें से कुछ लोगों के नाम इस प्रकार हैं- अब्बास बिन मुत्तलिब, अक़ील बिन अबी तालिब, नोफ़ल बिन हारिस, अबुल आस बिन रबीअ, अबू उज़ैर, ख़ालिद बिन हिश्शाम, अबू दाआ बिन सहमी, अब्दुल्लाह बिन अबी बिन ख़लफ़ जमही, वहब बिन उमैर जमही, सुहेल बिन उमरू आमरी, इन सब ने अपना फ़िदयः अदा करके इस्लाम क़बूल कर लिया था।

बदर की लड़ाई के साथ एक सम्बंध रोमी शासन की विजय का भी है। रोमी शासन की विजय के ही विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी थी तथा उसका सम्बंध बदर के युद्ध से भी है इस लिए यहाँ उसका बयान करना भी उचित लगता है। नबुव्वत के पाँचवें साल में सूरः रोम नाज़िल हुई जिसमें रोमी शासन के ग़ल्बः की भविषय वाणी की गई थी। अल्लाह तआला ने इसकी आरम्भिक आयतें अवतरित फ़रमाईं तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. मक्का के आस पास के क्षेत्रों में इन आयतों का पढत हुए एलान करन लग कि- الٓمّٓ ۔ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۔ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۔ अर्थात, मैं अल्लाह सर्वाधिक जानने वाला हूँ। रोम वालों पर ग़ल्बः हुआ, निकट की धरती पर, तथा उन पर गल्बः होने के बाद फिर वे अवश्य ही ग़ालिब आ जाएँगे, तीन से नौ साल की अवधि तक। सही बुख़ारी में रिवायत है कि जब फ़ारस और रोम वालों क बीच युद्ध हुआ तो मुसलमान रोम वालों की विजय को पसन्द करते थे क्यूँकि वे अह्ले किताब थे, जबकि क़ुरैशी काफ़िर अह्ले फ़ारस की विजय को पसन्द करते थे क्यूँकि वे मजूसी (आग पजक) थे। इस बात पर हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा अबू जहल के बीच शर्त तय हो गई तथा पाँच साल की अवधि रखी गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वहाँ بِضۡعِ का शब्द है तथा बिदअ

तो नौ वर्ष अथवा सात वर्ष की संख्या पर बोला जाता है, अतः अवधि को बढ़ा दो, फिर उन्होंने ऐसा ही किया। अतएव रोम वाले ग़ालिब आ गए। शअबी कहते हैं कि उस समय शर्त लगाना वैध था।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन घटनाओं की पेशगोई की है उनमें एक साफ़ एवं स्पष्ट उच्च कोटि की भविष्य वाणी रोम वालों का ग़ल्बः थी। अरब के दोनों छोर पर फ़ारस तथा रोम के शासन स्थापित थे। दोनों में लम्बी अवधि से लड़ाई जारी थी। नबी की नियुक्ति के पाँचवें साल 614 ई. में दोनों में एक रक्तरंजित युद्ध हुआ। रोम के शासन के पुर्ज़े उड़ गए। युद्ध परिणाम सम्भावना के विरुद्ध निकला। काफ़िरों ने मुसलमानों को कटाक्ष किया कि यदि तुम हमसे लड़ते तो हम भी ग़ालिब हाते। उस समय रोमियों की दशा दयनीय थी, भंडार ख़ाली थ, सेना तितर बितर थी, देश में विद्रोह था, हरक़ुल ऐसा भोग विलासी राजा था जो किसी योग्य नहीं था। रोमियों को कर अदा करने की लज्जात्मक शर्तें रखी गईं कि सोना, चाँदी, रेशम के थान तथा एक हज़ार कुंवारी कन्याएँ उनके हवाले की जाएँ। रोमियों में दुर्बलता की ऐसी स्थिति थी कि उन्होंने इन लज्जात्मक शर्तों को स्वीकार कर लिया। ईरान के अहंकारी राजा ख़ुसरो ने कहा कि मुझे ये सब नहीं चाहिए बल्कि हरक़ुल ज़ंजीरों में बन्धा हुआ मेरी राजगद्दी के नीचे चाहिए तथा वह सूरज देवता के आगे सिर झुकाएगा तो सन्धि स्वीकार करूँगा।

लिखने वाले ने यह लिखा है कि युद्धों की ऐसी स्थिति थी कि युद्ध स्थल से अति दूर शुस्क एवं बंजर धरती की सुनसान पहाड़ी से एक अमन का राजकुमार प्रकट हुआ तथा दुनिया की परिस्थितियों के पूर्णतः विरुद्ध रोम के गल्बः की पेशगोई फ़रमाई। लिखने वाले ने लिखा है कि यह पेशगोई घटना क्रम की दृष्टि से इतनी अधिक असम्भव एवं अविश्वस्नीय थी, अर्थात बहुत दूर की बात लगती थी यह कि काफ़िरों ने इसके घटित होने की अवस्था में कई ऊँटों के हारने की मुसलमानों से शर्त लगाई। अब मुसलमानों तथा काफ़िरां को बड़ी व्याकुलता से घटना के घटित होने की प्रतीक्षा थी। अन्ततः कुछ वर्षों के बाद दुनिया ने आशा के विरुद्ध पलटा खाया।

रोमी पतन के विख्यात इतिहासकार एडवर्ड गिबन हरक़ुल का हाल बयान करते हुए लिखता है कि रोम का राजा अपने अन्तिम दिनों में नपुंसक तमाशाई था। हरक़ुल के स्वभाव में इस शीघ्र इंक़लाब तथा घटनाओं के अनुसार इस आश्चर्य जनक बदलाव तथा उसके कारणों के विवरण में रोम के इतिहासकार ने विचित्र विचित्र बातें पैदा की हैं परन्तु गिबन लिखता है कि उन्हें क्या पता कि इस रक्तपात से दूर एक पैग़म्बराना हाथ रोमियों की सहायता के लिए फैला हुआ था, वही इस इंक़लाब तथा बदलाव का सबसे बड़ा आध्यात्मिक कारण था। मुसतदरक तथा जामे तिर्मज़ी में है, स्वयं उसने लिखा है कि रोम तथा फ़ारस का युद्ध जब शुरु हुआ तो मुशरिक ईरानियों के समर्थक थे क्यूँकि वे भी बुतों के पुजारी थे तथा मुसलमान रोमियों के समर्थक थे क्यूँकि वे अह्ले किताब थे। सहसा 621 ई. में हरक़ुल युद्ध के मैदान का सोज़र बन गया। अरब के नबी उम्मी स. की भविष्य वाणी शब्दशः पूरी हुई, ठीक उस समय जब मुसलमानों ने बदर की लड़ाई में काफ़िरों को पराजित किया तो रोमियों ने ईरानियों को पराजित किया।

कुछ युवा तथा नौजवानी में क़दम रखने वाले बच्चे मुझे पत्र लिखते हैं कि किस तरह पता चले कि इस्लाम सत्य धर्म है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही सच्चे नबी हैं। यहाँ के वातावरण ने उन पर

यह प्रभाव डालना शुरु कर दिया है। उनको इस्लाम की सच्चाई पर सन्देह होने लगा है। उन्हें ग़ैरों की अभिव्यक्तियों तथा क़ुर्आन की पेशगोईयों को देखना चाहिए। माता-पिता स्वयं भी पढ़ें तथा बच्चों को भी पेशगोईयाँ दिखाएँ कि किस प्रकार यह इस्लाम की सच्चाई का प्रमाण हैं। वालिदैन को भी तथा युवाओं को भी अपने ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता है, केवल सवाल कर देना काफ़ी नहीं है। सवाल करना है तो स्वयं भी ज्ञान प्राप्त करें, हमारे संगठनों को भी इस बारे में शिक्षा देनी चाहिए।

इतिहास के अनुसार यह साबित है कि 609 ई. में आप स. की नियुक्ति हुई। 610 ई. से रोम तथा फ़ारस की छेड़ छाड़ शुरु हुई। 613 ई. में युद्ध की घोषणा हुई। 614 ई. से रोमियों की पराज्य शुरु हुई। 616 ई. में रोम की पराज्य पूरी हो गई। 622 ई. से रोमियों ने फिर हमला शुरु किया। 623 ई. से इनकी सफलता शुरु हुई। 625 ई. में उनकी विजय पूरी हो गई। इस क्रम के अनुसार देखें तो इस पेशगोई की विशेषता यह है कि पराज्य के आरम्भ से विजय के आरम्भ तक अवधि को जोड़ें तो भी नौ वर्ष होते हैं और यदि पराज्य के परिणाम से विजय के आरम्भ तक जोड़ें तो भी नौ वर्ष होंगे। इस विजय के बाद फिर हरक़ुल वही सुस्त अय्याश राजा बन गया। ऐसा लगता था कि प्रकृति के हाथ ने कुछ वर्षों के लिए उसके मस्तिष्क को जगाया तथा पेशगोई के बाद विलास एवं मूर्छा के बिस्तर पर सुला दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में ईरानी लोग मुशरिक थे और रोम का राजा एक ईश्वर को मानने वाला था तथा मसीह को अल्लाह का बेटा नहीं मानता था। इसी पर यह आयत अवतरित हुई थी जब रोमी नष्ट हो चुके थे उस समय ख़ुदा ने उनकी विजय की पेशगाई फ़रमाई थी कि जिस समय मुसलमानों को विजय होगी, उसी समय रोमियों को भी विजय मिलेगी।

फिर फ़रमाया, अब विचार करके देखो कि कैसी अद्‌भुत एवं महामान्य भविष्य वाणी है ऐसे समय पर यह पेशगोई की गई जब मुसलमानों की कमज़ोर एवं दुर्बल अवस्था स्वयं शंका में डूबी हुई थी, न कोई सामान था, न शक्ति थी, एसी अवस्था में विरोधी कहते हैं कि यह गिरोह शीघ्र ही लप्त एवं नष्ट हो जाएगा, अवधि की सीमा भी उसमें लगा दी और फिर يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ कह कर दोहरी पेशगोई बना दी, अर्थात जिस दिन रोमी फ़ारसियों पर ग़ालब आएँगे उसी दिन मुसलमान भी सफलता पाकर ख़ुश होंगे। अतः जिस तरह यह पेशगोई थी उसी तरह बदर के दिन यह पूरी हो गई। उधर रोमी ग़ालिब आए और इधर मुसलमानों को विजय मिली।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि यह सिलसिला अभी चलेगा, शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा। हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में मुकर्रम फ़रास अली अब्दुल वाहिद साहब यू.के. के निधन पर उनका सद्‌वर्णन तथा जमाअती सेवाओं का वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ
فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي
الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131